

9609. R. GORR. 1, 75, 1. 3, 50, 15. 55, 32. 4, 39, 16. BHĀG. P. 3, 19, 20. 8, 10, 50. संयोगो वै प्रीतिको मरुत्सु प्रतिदृश्यते MBh. 1, 649. निमित्तलक्षणज्ञानं शाकुनं स्वप्रदर्शनम् । अथश्यं मुखद्वेषु नराणां प्रतिदृश्यते ॥ R. 3, 58, 5. तस्मात् — ब्राह्मणो गुणवान्कश्चित्पुरोधाः प्रतिदृश्यताम् *erscheine als so v. a. sei* (WEST.: *providere, parare*) MBh. 1, 664. प्रत्यदृश्यत् 3, 11487. 8, 2732. तीर्थेषु प्रतिदृष्टेषु *wenn heilige Badeplätze sich zeigten so v. a. an heil. Bad.* (BUANOUF: *célèbre*) BHĀG. P. 4, 26, 6. — *caus. sehen lassen, zeigen: लघ्वस्त्रम्* MBh. 3, 16425.

— *वि med. pass. deutlich sich wahrnehmen lassen, zum Vorschein kommen, erscheinen: अदर्शिवि स्मृतिर्दिवः* RV. 1, 46, 11. *वि सूना दृशे* 135, 7. MBh. 1, 1084. 3, 405. 4, 1880. 5, 5215. 6, 2773. 7, 6250. R. GORR. 1, 13, 14. 5, 95, 41. 6, 19, 59. BHĀG. P. 9, 4, 23. — *caus. sehen lassen, zeigen, an den Tag legen: ब्राह्म विदर्शयन्* MBh. 2, 2633. *श्रीप्रमस्त्रम्* 4, 1844. 7, 860. 1604. 8, 943. HARIV. 4738. *त्रिदर्शयतो विविधान्भूयश्चित्राश्च निर्करान्* R. 2, 48, 13. स यदा पुष्पिता भूवा फलानि न विदर्शयेत् 103, 7. R. GORR. 1, 57, 2. 6, 16, 67. गुरोः प्रीतिम् 1, 2, 21 (SCHL. 22). 2, 98, 12. 3, 35, 23. 72, 29. BURN. Intr. 164, N. 1. *zeigen so v. a. lehren: एवंविधं राम त्वया मम विदर्शितम्* R. 2, 29, 7.

— *सम् 1) erblicken, gewahr werden: act.: रातसं संदर्श कृ* R. 1, 4, 53. 48, 23. 61, 11. 2, 113, 23. 4, 47, 10. ततो जालं वाणामयं विवृतं संदृश्य MBh. 5, 7209. HARIV. 8407. *संदृश्य त्पणमङ्कुरं तदखिलम्* BHARTR. 3, 21. *संदृश्यन्ति नराशान्ये स्वह्रूयेण विनाशनम्* MBh. 12, 1068. *med.: तस्य संदृश्यते फलम्* R. 5, 31, 52. *pass. gesehen werden von: धिक्त्रो त्रिशिरसा नाहं संदर्शिये ऽद्य यत्पुनः* BHĀṬṬ. 16, 9. *चन्द्रः पापसंदृष्टः* (in astrol. Bed.) VARĀH. LAGHÚ. 5, 1, 9, 16. — 2) *in Betracht ziehen, erwägen: संदृष्ट्यपकर्मकृत्* R. 2, 1, 19. — *med. (intrans. P. 1, 3, 29, VĀR. 1. 2. VOP. 23, 14) pass. 1) gleichzeitig oder beisammen gesehen werden, — erscheinen: इन्द्रोऽसं हि दत्तसे* RV. 1, 6, 7. *सं भूया अतो धसिरा अदत्त 7, 83, 6. समिव वा स्मे लोका दृशिरै* PĀNĀV. Br. 12, 2. *संदृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राणि* AV. 14, 9, 2. *तदिदमेकमेव रूपं समदृश्यताप एव hatte ein gleichförmiges Aussehen, nämlich das des Wassers* ÇĀT. Br. 6, 1, 1, 12. 5, 4, 2. *जीवाश्च पितरश्च न संदृश्यते* 13, 8, 4, 12. — 2) *gleich aussehen, gleichen: अङ्गणीवेच्छुङ्गिणां सं दृष्ट्रे स्वरवः* RV. 3, 8, 10. *कवोऽरिच्छामि संदृशे सुमेधाः ich wünsche an Weisheit den Sehern zu gleichen* 38, 1. *अर्धाकृपोः पृथिवीं संदृशे दिवे du machtest die Erde dem Himmel gleich* 2, 13, 5. *अग्रयं ऽह्नासः समदत्त । उषसामिव केतवः die brennenden Feuer sahen aus wie die Helle der Morgenröthe* 8, 43, 5. — 3) *vor Augen kommen, sichtbar —, wahrgenommen werden, erscheinen: यादृशान्यत्र रूपाणां संदृश्यते बहूनि च* MBh. 4, 1291. 16, 4. BHĀG. 11, 27. R. 2, 96, 24. 3, 16, 36. 6, 19, 5. *तमास्थितः संदृशे किरिटी* ARĀ. 1, 3. VARĀH. BRH. S. 28, 11. 50, 19. *स्त्रीणामशितितपुल्वममानुषीषु संदृश्यते* ÇĀK. 118. *अप्यल्पकालसंदृष्टप्रकाराट्टालमण्डलम् । तत्किंनरपुरं लेभे गन्धर्वनगरोपमाम् ॥* RĀGĀ-TAR. 1, 274. — *caus. 1) sehen lassen, zeigen: संदर्शयामास तदात्मलोकान्सर्वीस्तथा पुण्यकृताम्* MBh. 13, 3505. HARIV. 10380. R. GORR. 1, 78, 1. 3, 70, 19. 6, 1, 28. RAGH. 13, 42. PĀNĀT. 5, 8. KATHĀS. 21, 90. 25, 189. BHĀG. P. 1, 1, 22. 13, 27. 4, 19, 20. 20, 38. BHĀṬṬ. 4, 33. *आत्मानं मृतवत्संदृश्य* HIT. 23, 7. *an den Tag legen, offenbaren: अयनया विनेतुः संदर्शितेव ललिताभिनयस्य शिला* MĀLAV. 67. *यत्सो ऽपि भीमकलुषाः प्रवृत्तीः समदर्शयत्* RĀGĀ-TAR. 4, 309.

III. Theil.

5, 377. VARĀH. BRH. S. 50, 1. BHĀṬṬ. 5, 83. *zeigen so v. a. darstellen: मुकुटोद्गनीलमणिभिः संदर्शितेन्द्रीवरम्* (इन्द्रीवर *Diene*) — *श्रीगोविन्दपदारविन्दम्* Git. 7, 42. *घटाबन्धमेकाङ्गाः समदर्शयन्* RĀGĀ-TAR. 6, 244. — 2) *sich Jmd (acc.) zeigen, zum Vorschein kommen: एवं संदर्शयित्वा तु नार्दम्* MBh. 12, 12882. *अतर्कितो मुकुर्भूवा पुनः संदर्शयत्यपि* R. 3, 50, 10. — Vgl. *संदर्श, संदर्शन, संदृष्ट, संदृष्टय.*

— *अनुसम् der Reihe nach erwägen* MBh. 12, 12024.

*दर्श* (von *दर्श*) 1) *adj. am Ende eines comp. blickend auf, schauend, hinsehend auf, ein Absehen habend auf; s. अक्सानं, आदिनव, तत्र, वधू.* — 2) *m. a) am Ende eines comp. Anblick, = दर्शन* H. an. 2, 547. *fg. = अक्सलोकान* MED. Ç. 6. *प्रियं adj. von angenehmem Aussehen* MBh. 13, 6668. Vgl. *इदर्श, आत्म.* — *b) oxyt. gaṇa पचादि* zu P. 3, 1, 134. *auch parox. der eben sichtbar werdende neue Mond, der Tag desselben und die Feier des Tages* (दर्शयाग Verz. d. B. H. No. 139) AK. 1, 1, 3, 8. 2, 7, 47. TRIK. 1, 1, 106. H. 150. 823. H. an. (wo पत्तात्तैष्टौ für पत्तात्तै ऽब्धौ zu lesen ist). MED. AV. 7, 81, 3. 4. TBR. 1, 2, 2, 14. *दर्शय* पूर्णमासश्च TS. 3, 4, 4, 1. *एष एव दर्शो यच्छन्द्रमा दृश्य इव ह्येषः* ÇĀT. Br. 11, 2, 4, 1. *दर्शो वा पौर्णमासे वाग्निसंधानं कुर्वति* GOBH. 1, 1, 14. ÇĀNKH. GRH. 1, 3. KAUC. 24. 139. *दर्शात्ययेन्दुप्रियदर्शन* RAGH. 18, 34. 14, 80. MĀRK. P. 30, 25. *न दर्शेन विना आह्वमाहितयोर्द्विजन्मनः* M. 3, 282. 4, 25. 6, 9. MBh. 1, 918. 3, 15410. 9, 2884. 12, 1007. R. 1, 53, 24. BHĀG. P. 5, 7, 5. *neutr.: दर्शं च पौर्णमासे च यस्य तिष्ठेत्प्रतिष्ठितम्* MBh. 3, 14206. *दर्शपूर्णमासौ Neumond und Vollmond, die Tage und die Feier, welche allen anderen liturgischen Handlungen vorangeht*, TBR. 2, 2, 2, 1. TS. 1, 6, 3, 1. 3, 2, 5, 1. AIT. Br. 1, 1. ÇĀT. Br. 1, 3, 5, 11. 2, 4, 2, 11. KĪṬJ. ÇR. 1, 2, 11. ĀÇV. ÇR. 2. 8. 4. 1. *अथ दर्शपूर्णमासावारभते ताभ्यां संवत्सरमिष्ट्वा सोमेन पशुना वा यजत इति* ĀPASTAMBA bei SĀJ. zu AIT. Br. 1, 1. Z. d. d. m. G. IX, LXXIII. *याज्ञिन्* TS. 2, 2, 2, 1. ÇĀT. Br. 10, 1, 5, 4. *Auch दर्शपूर्णमासौ* ÇĀNKH. ÇR. 13, 20, 3. LĀṬJ. 10, 16, 4 *und in den Comm. दर्शपूर्णमासद्वौत्र n. Verz. d. B. H. No. 120. दर्शपूर्णमासेष्टिप्रयोग m. 248. दर्शपूर्णमासविधि und प्रायश्चित्तविधि* MACK. Coll. 1, 30. *Personif. ist der Neumond oder der Neumondstag ein Sohn Dhātār's von der Sinivāli* BHĀG. P. 6, 18, 3.

*दर्शक* (wie eben) 1) *adj. (vom simpl.) sehend: कर्णधार इवापारे भगवान्पारदर्शकः* BHĀG. P. 1, 13, 38 (BURN.: *zeigend*). *zusehend, Zuschauer: अग्निमन्त्रितो न गच्छेत् यज्ञं गच्छेत् दर्शकः* MBh. 13, 5097. *sehend nach: एकाग्रः स्याद्विवृतो नित्यं विवरदर्शकः* 1, 5559. *sehend so v. a. prüfend, untersuchend; s. अत. = प्रवीणा* H. an. 3, 51. MED. k. 102. — 2) *adj. (vom caus.) zeigend, = दर्शयित्* H. an. MED. मार्गस्य *Wegweiser* KUMĀRAS. 6, 52. मार्गं MĀNÚ. 63, 4. *अनिष्टं* HAUGHT. *zur Erscheinung bringend: लोहितस्य so v. a. zu Blute schlagend* M. 8, 284. *sehen lassend, aufdeckend: पुरो मिथ्या गुणप्राक्ठी परोत्तं दोषदर्शकः* RĀGĀ-TAR. 1, 360. *zeigend so v. a. erläuternd: परोत्तार्थस्य दर्शकम्* (शास्त्रम्) HIT. Pr. 9, 7. 1. für *दर्शन*. — 3) *m. Thirsteher (Aufpasser oder Zeiger d. i. Einführer; vgl. उपदर्शक, दर्शयित्)* AK. 2, 8, 4, 6. H. Ç. 140. H. an. MED. — 4) *m. pl. N. pr. eines Volkes* MBh. 6, 361. VP. 191.

*दर्शित* (wie eben) UNĀDIS. 3, 110. 1) *adj. sichtbar, auffallend, ansehnlich, schön, conspicuus: (अग्ने) यो विश्वतः प्रत्यङ्मुसिं दर्शतः* RV. 1, 144, 7. 3, 1, 3. 8, 41, 3. *तिरस्तमोसि दर्शतम्* 8, 63, 5. *उडु त्यदर्शितं वर्पुर्दिव ऐति*